प्रथम अध्याय

जयप्रकाश कर्दम :
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय
"जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रास्ताविक :

साहित्यकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव होता है। लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उसके साहित्य में होती है। साहित्य में ही साहित्यकार के जीवन का प्रतिबिंब नजर आता है। रचनाकार के लेखकीय व्यक्तित्व के गठन एवं विकास में जिन महत्त्वपूर्ण पहलुओं का योगदान होता है, उनका विवेचन-विश्लेषण भी होना आवश्यक है। डॉ.सरोज मार्कण्ड़ेय के अनुसार "किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएवं व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है। व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचायक न हों अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं, मानसिक, सांस्कृतिक पूँजीभूत रूप है।"[1]

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व की विशेषताएँ हमें उनके परिवेश तथा जीवन से ज्ञात होती है। जयप्रकाश कर्दम जिस वातावरण में रहे तथा उन्होंने जो अनुभव किया वही उनके साहित्य में परिलक्षित होता हैं।

जयप्रकाश कर्दम दलित वर्ग से होने के कारण उनके साहित्य में दलित जीवन से संबंधित चित्रण मिलता है। उनका साहित्य दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभवों का है, जो एक दलित जीवन के यथार्थ को हमारे सामने लाता है। जयप्रकाश कर्दम का साहित्य दलितों के जीवन-संघर्ष और उनकी बेचैनी के जीवंत दस्तावेज है। इनके साहित्य में दलित जीवन की पीड़ा और छटपटाहट दिखाई देती है। जयप्रकाश कर्दम के साहित्य की मांग विश्वदृष्टि, जातिभेद का त्याग, उदात्त आदर्श

---

1. डॉ.सरोज मार्कण्डेय - निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ - पृष्ठ - 12

भाव तथा आदर्श जीवन का निर्माण करना है। जो संपूर्ण मानव जाति को सत्य के प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर करना है। इनके जीवन के पहलुओं को शब्दों में बाँधना आसान नहीं है। फिर भी उनकी साहित्य कृतियों को समझ लेने हेतु उनके व्यक्तिगत जीवन को समझ लेने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगा इसमें संदेह नहीं।

1.1 जीवन परिचय :

जयप्रकाश कर्दम के जीवन का 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' के महत् कार्य में योगदान रहा है। यहाँ उनके जीवन का संक्षिप्त विवेचन को रेखांकित किया है।

जयप्रकाश कर्दम का जन्म **17** फरवरी, **1959** में उत्तरप्रदेश में गाजियाबाद के निकट हापुड़ रोड़ पर स्थित इन्दरगढ़ी गाँव में एक दलित परिवार में हुआ। लेकिन शैक्षिक प्रमाण-पत्र और सरकारी दस्तावेजों में इनकी जन्मतिथि **5** जुलाई, **1958** दर्ज है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण असली जन्मतिथि **17** फरवरी, **1959** होते हुए जल्दी-जल्दी कमाने का दबाव इनके ऊपर था। इसलिए हाईस्कूल का फॉर्म भरते समय उन्होंने अपनी दूसरी जन्मतिथि लिख दी। वो जल्दी से अट्ठारह वर्ष के हो जाएँ और सरकारी नौकरी के लिए आवेदन भेज सके इसलिए उन्होंने दूसरी जन्मतिथि लिखी। अब **5** जुलाई, **1958** ही उनकी अधिकारिक जन्मतिथि है।

जयप्रकाश कर्दम के पिता का नाम 'हरिसिंह' और माता का नाम 'अतरकली' है। इनके पिता पढ़े-लिखे थे उन्होंने मैट्रिक तक अपनी शिक्षा पूरी की थी। वे मेहनत मजदूरी करते थे और अपनी घर-गृहिस्थी चलाते थे। किन्तु सन **1976** में बीमारी से त्रस्त होने के कारण उनकी असमय मृत्यू हो गयी। जयप्रकाश कर्दम की माँ का नाम 'अतरकली' था, लेकिन सब रिश्तेदार उन्हें 'अंतरों' नाम से पुकारते थे। जयप्रकाश कर्दम के पिताजी बीमार होने के कारण उनकी माँ घर-खेतो में काम करती थी। वो दूसरों के खेतो में मजदूरी भी करती थी। जयप्रकाश कर्दम के तीन भाई है और सोनवती, मधुबाला और मालती ये तीन इनकी बहनें है। अपने भाई-बहनों के बारे में कर्दम लिखते है - "भाई-बहन में सबसे बड़ी बहन है सोनवती मुझसे दो-तीन वर्ष बड़ी उसकी शादी

जल्दी ही हो गयी थी जब मैं सातवी कक्षा में पढ़ता था। दुसरे नंबर पर मैं रहा। उसके बाद छोटा भाई रणजितसिंह वह दिल्ली में विद्युत विभाग में नौकरी करता है। तीन बच्चों का पिता है। गाजियाबाद में उसका अपना मकान है उसने अब गाड़ी भी खरीद ली है। चौथे और पाचवे नंबर पर दो बहने मधुबाला और मालती। मधु (रोहिणी) दिल्ली में रहती है। उसका पति दिल्ली पुलिस में नियंत्रण शाखा में काम करता है। मालती का पति नैशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन (N.T.P.C) नोएड़ा में कर्मचारी है। वे वही पर रहते हैं। सबसे छोटे भाई है संदिपकुमार और कुलदीप। संदिपकुमार एम. ए. पास है उसकी पत्नी अध्यापिका है और ऐटा (उत्तरप्रदेश) में तैनात हैं। वे वही पर रहते है। कुलदीप गाँव में रहकर मजदूरी करता है। वह मैट्रिक भी पास नहीं कर सका।"[1]

जयप्रकाश कर्दम का बचपन उनके गाँव इन्दरगढ़ी में बीता। बचपन के समय उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। लेकिन उनके दादाजी के मृत्यु के बाद उनके घर की स्थिति बदल गयी। जयप्रकाश कर्दम के पिताजी टी. बी. के मरीज होने के कारण वे खेत में काम नहीं कर सकते थे इसलिए एक-एक करके उनके सारे खेत बिक गये। बाद में उन्हें पेट भरने के लिए मुश्किल पड़ गयी। जब जयप्रकाश कर्दम 11 वी कक्षा में पढ़ते थे सन **1976** में उनके पिताजी का देहान्त हो गया। घर की सारी जिम्मेदारी बड़ा होने के कारण उनके उपर आ गयी। इसलिए वो स्कूल न जाकर दिन में मजदूरी करते थे और रात के समय में घर में पढ़ाई करते थे। उन्होंने इन्टरमीड़िएट विज्ञान विषयों के साथ पास हुए लेकिन कॉलेज की फिस भरने के लिए पैसे न होने के कारण वो बी. एस. सी. में प्रवेश न ले सके। बचपन में जयप्रकाश खूब खेलते थे, गाते थे। उनके दादी को 'आल्हा' और 'ढोला' सुनने का शौक था। वो पूरी तर्ज के साथ 'आल्हा' और ढोला गाते थे, उन्होंने बचपन में नाटक भी खेले हैं।

---

1. श्री.नितीन गायकवाड -जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - अप्रकाशित लघु शोधप्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर - पृष्ठ - 2, 3

जयप्रकाश कर्दम की प्राथमिक शिक्षा उनके गाँव इन्दरगढ़ी में हुई। उन्होंने इन्टरमीड़िएट विज्ञान विषयों को लेकर पूरा किया। लेकिन घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने की वजह से उन्होंने बी.एस्सी. न करके दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी और हिंदी आदि विषयों में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। जयप्रकाश कर्दम ने एम. ए. की उपाधि दर्शनशास्त्र, हिंदी और इतिहास आदि विषयों में प्राप्त की। सन **2000** में 'रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन' विषय पर 'मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ' से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। जयप्रकाश कर्दम उच्चशिक्षित है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई उपाधियों को कठोर परिश्रम के साथ प्राप्त किया है।

नौकरी के बारे में कर्दम लिखते है - "मेरे सरकारी नौकरी की शुरूआत सन **1980** में बी. ए. की पढ़ाई के दौरान हो गयी थी। सबसे पहले विक्री कर विभाग में अमीन बना गाजियाबाद में ही। फिर क्लार्क के पद पर दो-तीन साल काम किया। इस दौरान बी.ए. हुआ फिर दर्शनशास्त्र विषय में एम.ए. किया। सन **1984** में बैंक नौकरी में चला गया। पहली नियुक्ति इलाहाबाद में हुई। फिर स्थानांतरित होकर मेरठ आ गया। इस दौरान इतिहास में भी एम. ए. की उपाधि हासिल की और सिविल सर्विस की परीक्षाओं में भाग लिया। उत्तर-प्रदेश की P.C. S. की परीक्षा दो बार पास की। पहली बार साक्षात्कार में सफल नहीं हो सका, दूसरी बार अधिनस्थ सेवा में सफल हुआ नायब तहसीलदार के पद पर मेरी नियुक्ती हुई जिसे मैंने स्वीकार नहीं किया।

सन **1989** में संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से केन्द्रिय सचिवालय राजभाषा सेवा में सहायक निर्देशक के पद पर चयनित हुआ। सन **1996** में पदोन्नत होकर उपनिदेशक बना। अब भारतीय उच्चआयोग, पोर्ट लुई (मॉरिशस) में द्वितीय सचिव (शिक्षा एंव संस्कृति) के पद पर प्रतिनियुक्त पर कार्यरत हूँ। यह नियुक्ति भी संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से हुई है।"[1]

---

1. श्री.नितीन गायकवाड -जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - अप्रकाशित लघु शोधप्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर - पृष्ठ - 5

जयप्रकाश कर्दम का विवाह 16 अक्तूंबर, 1988 में ताराजी से बौद्ध पद्धति से हुआ। ताराजी उच्चशिक्षित है और आज माध्यमिक विद्यालय, दिल्ली सरकार में अध्यापक का काम करती है। जयप्रकाश कर्दम को कु. कम्पिला, कु. विशाखा और आयु.कुणाल ये तीन संतानें है। दो बेटियों ने इंजीनियरिंग और मेड़िकल की प्रवेश परीक्षा अगस्त, 2008 में पास की। तो कुणाल 9 वी कक्षा में पढ़ता है।

जयप्रकाश कर्दम साधारण तरीके से रहना और साधारण तरीके का खान-पान पसंद करते है। उन्हें हरे पत्तेवाली सब्जियाँ, फल और दूध पसंद है। जयप्रकाश कर्दम सादी रहन-सहन और उच्च-विचारों के पुरस्कर्ता है।

1.2 व्यक्तित्व के पहलु :

जयप्रकाश कर्दम के जीवन के विवरण को देखने के पश्चात उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं में संघर्षशील, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, प्रेरणादायी, मानवतावादी मूल्यों के अनूयायी आदि विविध पहलुओं से संपन्न एक आदर्श साहित्यकार और व्यक्ति के रूप में दिखाई देते है। जयप्रकाश कर्दम ने परिवेश के अनुकुल अपने जीवन को दिशा देने का कार्य किया है। उनके व्यक्तित्व के पहलुओं का उनके साहित्यपर प्रभाव दिखाई देता है।

जयप्रकाश कर्दम पर उनके परिवार का प्रभाव नजर आता है। इनके परिवार के चाचा हरपालसिंह उनके प्रेरणास्रोत है। इनके चाचा ने इन्हें श्रम, संघर्ष और संयम का महत्त्व बताया है। इनके चाचा के मित्र मुकूटलाल और हुकुमसिंह का भी प्रभाव इनपर दिखाई देता है। साथही इनके जीवन पर इनके गुरू मुरालीलाल शर्मा, रामचरण शर्मा, किरणसिंह भारद्वाज आदि का भी प्रभाव दिखाई देता है। डॉ.बाबासाहेब अम्बेड़कर जी के “Budha and His Dhammas” तथा “डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर का जीवन संघर्ष” इन पुस्तकों से और गौतम बुद्ध, संत कबीर, संत रैदास आदि समाज सुधारकों से प्रेरित रहे हैं।

जयप्रकाश कर्दम जीवन में शिक्षा, स्वातंत्र्य और अनुशासन को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। तथा घनिष्ठ मित्रता को भी जीवन में अहम् मानते हैं। वो अनुशासन को जीवन में सर्वोच्च महत्त्व देते हैं। तथा अनुशासन पालन को प्रगति की सीढ़ी मानते है। जयप्रकाश कर्दम को जीवन में कई समस्याओं के साथ संघर्ष करना पड़ा। इन समस्याओं का सामना करते हुए वो उच्च पदस्थ अधिकारी बने हैं। इसलिए इन्हें - "डगर से लेकर राजपथ तक के संघर्षशील यात्री के रूप में उनका जीवन उभरा है।"[1]

जयप्रकाश कर्दम के साहित्य से स्पष्ट होता है कि वो श्रमसाध्य रचनाकार तथा अध्ययनशील व्यक्ति है। वो लेखन प्रक्रिया में परिश्रम को महत्त्वपूर्ण मानते है। लेखकों को कभी भी अपने लेखन से संतुष्ट नहीं होना चाहिए ऐसा इनका मानना है। इनकी दृष्टि से साहित्य का उद्देश समाज को बेहतर समाज, मनुष्य को बेहतर मनुष्य और दुनिया को बेहतर दुनिया बनाना है। जयप्रकाश कर्दम अपने जीवन के बारे में विचार व्यक्त करते हुए लिखते है - "मैं मानता हूँ कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त हमारा जीवन जीने के लिए है और सबको समान रूप में जीने का अधिकार और अवसर होना चाहिए। जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोन सदैव सकारात्मक रहा है, विपरित परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखकर हमें आगे बढ़ने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में सफलता के लिए परिश्रम, आत्मविश्वास तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और इमानदारी का होना आवश्यक है। संघर्ष और आपदायें हमें मजबूती प्रदान करती है, हमें ताकद देती हैं।"[2] अत: विचारों में जयप्रकाश कर्दम सकारात्मक विचारों को महत्त्व देते है तथा जीवन में परिश्रम आत्मविश्वास तथा ईमानदारी को महत्त्वपूर्ण मानते है।

जयप्रकाश कर्दम गौतम बुद्ध, कबीर, महात्मा फुले तथा अम्बेडकरवादी विचारों के अनुयायी है। इनके साहित्य में मानवतावाद को महत्त्व दिया है। तथा इनका साहित्य आस्तिकता को नकारता है।

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - छप्पर पुस्तक के फ्लैप से उध्दृत
2. श्री.नितीन गायकवाड -जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - अप्रकाशित लघु शोधप्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर - पृष्ठ - 11

जयप्रकाश कर्दम का जन्म एक दलित परिवार में होने के कारण दलित जीवन की समस्याओं को इन्होंने नजदीक से देखा है और अनुभव भी किया है। अपने इसी अनुभवों को इन्होंने अपनी रचनाओं में रेखांकित किया है। दलितों के प्रगति के लिए अपने साहित्य के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये है। इससे स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश कर्दम के मन में दलित समाज के प्रति आस्था है और इन्हें वो प्रगति की राह पर लाना चाहते है। इन्होंने आस्था के साथ दलित जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

साहित्य सृजन के संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं - "मेरा गाँव अम्बेडकरवादी विचारों से परिचित और प्रभावित एक बहुल गाँव है। आजादी के बाद की पीढ़ी बाबासाहब अम्बेड़कर जी के विचारों से परिचित हुई तथा गाँव में बौद्ध धर्म और अम्बेडकर जी का प्रचार प्रसार हुआ। बचपन से ही मैं इन विचारों के संपर्क में आया। सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकलापों में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए मस्तिष्क में दलित प्रश्न कुलबुलाने लगे। व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना मन में पैदा होने लगी और जब लिखता शुरू किया तो स्वाभाविक रूप से ये सब बातें ये प्रश्न मेरी रचनाओं का विषय बनने लगे।"[1] अत: उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश कर्दम ने बाबासाहेब के विचार अनुभूति और संवेदना से प्रेरणा लेकर साहित्य सृजन किया।

1.3 कृतित्व :

जयप्रकाश कर्दम हिंदी दलित साहित्य में उल्लेखनीय है। वे अम्बेड़करवादी विचारों के अनुयायी है। उनके साहित्यसृजन की प्रेरणा स्वानुभूति, अपने दलित समाज के प्रति आस्था और गौतम बुद्ध, संत कबीर, महात्मा फुले, संत रैदास तथा डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर रहे हैं। उनका साहित्य समाज परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने साहित्य में दलित समाज केंद्र में रखकर काव्य, कहानी, उपन्यास, वैचारिकी लेख आदि का सृजन किया है।

---

1. श्री.नितीन गायकवाड -जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन - अप्रकाशित लघु शोधप्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर - पृष्ठ - 13

1.3.1 उपन्यास :

1.3.1.1 छप्पर :

जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर' उपन्यास सन 1994 में समता प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश राज्य के मातापुर गाँव में स्थित एक दलित चमार जाति के परिवार की संघर्ष कहानी को अधोरेखित किया है। प्रस्तुत उपन्यास अम्बेडकरवादी विचारधारा की पहल करता है। इसमें दलित जीवन के शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दलित नारी, सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है। इस उपन्यास में दलित जीवन की विविध विचारधारा को स्पष्ट किया है।'छप्पर' उपन्यास दलित जीवन के परिवेश को केंद्र में रखकर दलितों में सामाजिक जागृती के प्रगतीशील विचारधारा को प्रवाहित करता है। उपन्यास कथ्य, पात्र, परिवेश तथा भाषाशैली एवम् निश्चित उद्देश्य पूर्ति में सक्षम कृति है।

1.3.1.2 करूणा :

जयप्रकाश का 'करूणा' यह लघु उपन्यास सन 1986 में भारत - सावित्री प्रकाशन, गाजियवाद द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास के सर्जन के केंद्र में गौतम बुद्ध की विचारधारा है। 'करूणा' उपन्यास भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित विषमतावादी व्यवस्था को ध्वस्त कर मानवतावादी मूल्यों से निहीत समाज निर्माण करने की विचारधारा को स्पष्ट करता है। 'करूणा' उपन्यास में बौद्ध धम्म की महत्ता को उजागर करते हुए विश्वकल्याण की कामना की है। इस उपन्यास में समता, स्वातंज्य, बंधुता और न्याय इन मानवतावादी मूल्यों का प्रचार तथा प्रसार किया है। "बुद्ध के सिद्धातों में ऐसी ही उत्कट प्रेरणा है, जिन्हें अपनानेवाले सब लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम और सद्‌भाव से रहते हैं। भगवान बुद्ध के सिद्धातों में न्याय के प्रति आग्रह है। समता, मैत्री और भाईचारा इन सिद्धांतों का मूल है। इसी से सुखी और संपन्न समाज का निर्माण हो सकता है। भगवान बुद्ध के मध्यम मार्ग को अपनाने से ही समाज समुन्नत एवं

सुविकसित होता है।"[1] उक्त कथन में 'करूणा' उपन्यास में निहित उद्देश स्पष्ट हुआ है।

1.3.2 कविता संग्रह :

1.3.2.1 गूंगा नहीं था मैं :

जयप्रकाश कर्दम का 'गूंगा नहीं था मै' इस कविता संग्रह का प्रकाशन सन 1999 में हुआ। इस काव्य-संग्रह में समाज में व्याप्त विषमता, जातिभेद आदि का चित्रण किया है। कवि ने दलित वर्ग को महत्त्व देकर उसकी उपेक्षा, वेदना, पीड़ा एवं असहायता को अपने काव्य का विषय बनाया है। उपेक्षित दलित वर्ग के दुख-दर्द को काव्य रूप दिया है। भारतीय समाज में वर्ण के अनुसार जाति-व्यवस्था का जन्म हुआ। सवर्ण समाज के पास धार्मिकता की लगाम रहने के कारण उन्होंने दलित वर्ग को गुलाम बनाकर छोड़ा। रूढ़ि, परंपरा की आड़ में सवर्ण वर्ग ने दलितों की स्थिति पशु से भी बदतर बनायी। दलितों को मंदिर प्रवेश वर्ज्य, गाँव के बाहर बस्ती तथा उनके स्पर्श मात्र से वंचित रहने लगे। जयप्रकाश कर्दम ने इस काव्य-संग्रह में दलित वर्ग में स्थित अनेक समस्याओं को अंकित किया है।

1.3.2.2 तिनका-तिनका आग :

जयप्रकाश कर्दम का 'तिनका-तिनका आग' इस कविता-संग्रह का प्रकाशन सन 2004 में हुआ। इस कविता-संग्रह में हमें भूख, यंत्रणा, सांप्रदायिकता, उत्पीड़ा और जातिभेद का बेबाकी वर्णन मिलता है। साथ ही इन कविताओं में दलितों की अस्मिता से जुड़े सवाल उभरते है। इन कविताओं में परंपराओं और प्रथाओ से मुक्त होने का आदर्श मिलता है। इन कविताओं मानव अधिकार का सवाल उठाया है। इस कविता-संग्रह में कवि ने ब्राह्मणवाद पर चोट करने के साथ-साथ ऐसे दलितों से भी संवाद स्थापित करने का प्रयास किया है, जिन्होंने डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर जी को

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - करूणा, पृष्ठ - 71

भगवान बना लिया है। कर्दम की कविताओं में परिवर्तन की गूँज है। वे बदलाव के लिए उत्सुक दिखाई पड़ते है। इस कविता-संग्रह को पढ़ने से अहसास होता है कि, इन कविताओं में कहीं-न-कहीं दलित अपने पैरों पर खड़ा है। इस कविता-संग्रह में कवि को बदलाव की तलाश है।

1.3.3 बाल उपन्यास :

1. श्मशान का रहस्य

1.3.4 कहानी संग्रह :

1. तलाश

1.3.5 विचार प्रबंध / आलोचना :

1. वर्तमान दलित आंदोलन
2. अम्बेड़करवादी आंदोलन : दशा और दिशा
3. डॉ.अम्बेड़कर : दलित और बौद्धधर्म
4. हिन्दुत्व और दलित : कुछ प्रश्न कुछ विचार
5. इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन : साहित्य एवं समाज चिंतन
6. दलित विमर्श : साहित्य के आइने में
7. बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ

1.3.6 शोध - प्रबंध :

1. रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1.3.7 संपादित पुस्तकें :

1. जाति : एक विमर्श
2. बौद्ध धर्म और दलित
3. गुलामगिरी

1.3.8 बाल साहित्य :

1. महान बौद्ध बालक
2. मानवता के दूत
3. बुद्ध की शरणागत नारियाँ
4. बुद्ध और उनके प्रिय शिष्य
5. बुद्ध का समय
6. बौद्ध दार्शनिक
7. बौद्ध गाथाएँ
8. डॉ.अम्बेडकर का बचपन
9. डॉ.अम्बेडकर और उनके समकालीन
10. संतों की दुनियाँ
11. आदिवासी देवकथा - लिंगो
12. हमारे वैज्ञानिक - सी.वी.रामन

1.3.9 अनुवादित पुस्तक :

1. चमार ('दि चमार्स' का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद)

1.3.10 प्रकाशाधीन पुस्तकें :

1. हिंदी दलित साहित्य में सामाजिक - सांस्कृतिक चेतना
2. दलित साहित्य का दर्शन

1.3.11 पत्र - पत्रिकाओं से जुड़ाव :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी, (उत्तरप्रदेश) की त्रैमासिक शोध / आलोचना पत्रिका नया मानदंड के 'दलित चेतना', दलित साहित्य' व 'दलित आत्मकथा' विशेषांकों का संपादन।

2. दलित साहित्य (वार्षिकी) का 1999 से निरंतर संपादन।

1.3.12 अन्य विवरण :

1. अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और अनेक संगोष्ठियों में शोध - आलेखों का वाचन एवं व्याख्यान।
2. मराठी, मलयालम, तेलगु, पंजाबी, गुजराती, बंगला व अंग्रेजी में रचनाएँ अनुदित।
3. 'छप्पर' उपन्यास मराठी और तेलगु में अनुदित।
4. राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ, कविताएँ, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, समीक्षाएँ एवं स्मृति लेख आदि निरंतर प्रकाशित।
5. अनेक संपादित पुस्तकों, विशेषांको, स्मारिकाओं में रचनाएँ संग्रहित।
6. दूरदर्शन, आकाशवाणी के कई चैनल, केंद्रो से विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत वार्ताएँ आलेख, कविताएँ, साक्षात्कार आदि प्रसारित।
7. सदस्य, हिंदी अकादमी, दिल्ली।

फैलोशिप / पुरस्कार / सम्मान :

जयप्रकाश कर्दम जी की साहित्य सेवा और सशक्त साहित्य सर्जना तथा सामाजिक कार्यों के लिए भारत के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया हुआ है, ये सम्मान एवं पुरस्कार निम्नांकित हैं -

1.3.13 फैलोशिप :

1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (संस्कृति विभाग) भारत सरकार द्वारा फैलोशिप।

1. भारतीय बौद्ध महासभा, उत्तरप्रदेश द्वारा फैलोशिप।

1.3.14 पुरस्कार :

1. उत्तरप्रदेश समाज विकास संगठन द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर रत्न पुरस्कार।

1.3.15 सम्मान :

1. राष्ट्रीय अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा साहित्य सारस्वत सम्मान।
2. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश द्वारा संत कबीर सम्मान।
3. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उत्तरप्रदेश द्वारा संत रैदास सम्मान।
4. मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा कृति सम्मान।
5. भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर राष्ट्रीय सम्मान।
6. बहुजन अन्याय एक्शन समिति, अमरावती (महाराष्ट्र) द्वारा सम्मान।
7. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर अस्मिता सम्मान आदि।

निष्कर्ष :

जयप्रकाश कर्दम के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात् यह समझ में आता है कि उनका व्यक्तित्व, प्रामाणिक,अध्ययनशील, स्वाभिमानी, साहसी कला के प्रति रूचि, अंधश्रद्धा के कट्टर विरोधी साथही यथार्थ का चित्रण करने के हिमायती थे। समाज में चली आयी सड़ी गली परंपरा के प्रति विद्रोह कर समाज में परिवर्तन करने के पक्ष में उनकी दृष्टि चलती रही। समाज में समाधिष्ठित समाज की स्थापना करना ही उनके साहित्य सृजन का मूल उद्देश रहा है। उनका साहित्य दलितों में

चेतना जगाने के लिए प्रेरक बना रहा है। उनका साहित्य दलित लोंगों की यातनापूर्ण जिंदगी का जीवंत दस्तावेज है।

उनके व्यक्तित्व के बारे में देखे तो उनपर डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर, गौतम बुद्ध, संत कबीर, संत रैदास का प्रभाव पड़ा है। वे शिक्षा, समता और स्वातंत्र्य को जीवन में महत्त्वपूर्ण कड़ी मानते है। वे जीवन में निष्ठा और आपदायें हमें मजबूती प्रदान करते है ऐसा मानते है। वे गौतम बुद्ध, अम्बेडकर, कबीर आदि के विचारों के अनुयायी होने के कारण समाज में मानवता प्रस्थापित करने के पक्षधर है। उनका जन्म ही दलित वर्ग में होने के कारण उनका पूरा साहित्य दलित के प्रति आस्था और संवेदना जताता है। उनके मन में समाज व्यवस्था के परंपरागत विचारों के प्रति विद्रोही भावना प्रज्वलित हुई थी। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से जयप्रकाश कर्दम ने बाबासाहब के विचारों, अनुभूति और संवेदना से प्रेरणा लेकर साहित्य का सृजन किया है।

जयप्रकाश कर्दम के कृतित्व के बारे में देखे तो हिंदी दलित साहित्य में उनका योगदान सर्वश्रेष्ठ मानना चाहिए। उनके साहित्य में गौतम बुद्ध, संत कबीर, महात्मा फुले, संत रैदास और डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर आदि के विचारों से साहित्य सृजन किया।

कर्दम जी ने उपन्यासों द्वारा उन्होंने दलितों में सामाजिक जागृती के प्रगतशील विचारधारा को प्रवाहित किया है। साथ ही मानवतवादी मूल्यों से समाज का नवनिर्माण करना चाहते है। अपने उपन्यासों में समता, बंधुता, न्याय इन मानवतावादी मूल्यों का प्रचार, प्रसार किया है।

जयप्रकाश कर्दम के कविता संग्रह में समाज में व्याप्त विषमता तथा जातिभेद का चित्रण हुआ है। दलित वर्ग को महत्व देकर उसकी उपेक्षा, वेदना, पीड़ा एवं असहायता को काव्य का विषय बनाया है। सवर्ण समाज के पास धार्मिकता की लगाम रहने से उन्होंने दलित वर्ग को गुलाम बनाकर उसके अस्तित्व को कूचल डाला है। इसे उन्होंने इस काव्य संग्रह में अभिव्यक्ति दी है।

जयप्रकाश कर्दम ने कविताओं में भूख, यंत्रणा, सांप्रदायिकता, उत्पीड़ा और जातिभेद का चित्रण किया है। साथ ही दलितों की अस्मिता से जुड़े सवाल उभरते है। साथ ही व्यक्ति को परंपरा और प्रथाओं से मुक्त होने का आदर्श मिलता है। इस में ब्राम्हणवाद का विरोध है। इस के द्वारा कर्दम जी परिवर्तन के साथ समाज में बदलाव लाने का प्रयास करते है।

जयप्रकाश कर्दम का कृतित्व का विवेचन देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने दलित वर्ग को केंद्र में रखकर साहित्य-सृजन किया है। इनके साहित्य-सृजन में गौतम बुद्ध, संत कबीर, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब अम्बेड़कर के विचार दिखाई देते है।